राज्यपाल सचिवालय

लोक भवन, राजस्थान

संस्कृति युवा संस्था की ओर से "राजस्थान गौरव सम्मान समारोह" आयोजित

राजस्थानी राजस्थान की अपनी भाषा

राजस्थानी भाषा नहीं संस्कृति है -राज्यपाल

जयपुर, 30 जुलाई। राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे ने कहा कि राजस्थानी भाषा नहीं संस्कृति है। उन्होंने राजस्थानी भाषा में अपना संबोधन प्रारम्भ किया और कन्हैयालाल सेठिया की "धरती धोरा री" और महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की “इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय। पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय॥” पंक्तियां सुनाई और इनका अर्थ भी बताया।

राज्यपाल ने कहा कि राजस्थानी बहुत मीठी भाषा है। वह इसे प्यार करते हैं। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र के शिक्षा सचिव उनसे मिलने आए थे। उन्होंने एक पत्र दिया था और कहा था कि राजस्थान के बहुत से लोग महाराष्ट्र में रहते है, यहां भी मराठी भाषा के केंद्र खुलेंगे तो दोनों प्रदेशों में और निकटता आएगी। इस सम्बन्ध में ही प्रदेश में मराठी भाषा के केंद्र खोलने के लिए कहा गया। पर, मराठी भाषा अनिवार्य नहीं है ऐच्छिक है। उन्होंने कहा कि राजस्थानी तो राजस्थान की अपनी भाषा हैं। राजस्थानी केंद्र खोलने का कहा गया तो हमने तुरंत सभी विश्वविद्यालयों में राजस्थानी केंद्र खोलने के लिए भी आदेश जारी किया। उन्होंने चुटकी भी ली और कहा अच्छी बात है, मराठी केंद्र खोलने के बाद यहां के लोगों का राजस्थानी केंद्र खोलने के लिए ध्यान गया। उन्होंने कहा कि इस पर तो बहुत पहले ही शुरुआत हो जानी चाहिए थी।

राज्यपाल श्री बागडे गुरुवार को एक निजी होटल में "राजस्थान गौरव सम्मान समारोह" में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत विश्वगुरु तभी बनेगा जब हमारी संस्कृति और नैतिक मूल्य बचे रहेंगे। उन्होंने कहा कि पेपर लीक के प्रकरण इसीलिए होते हैं कि नैतिकता से व्यक्ति विमुख होने लगे। उन्होंने नैतिक मूल्य और संस्कृति बचाए रखने में सभी की भागीदारी का आह्वान किया।

राज्यपाल ने महाराणा प्रताप के दरबार के लेखक चक्रपाणि मिश्र ने "विश्ववल्लभ" ग्रन्थ की भी चर्चा की और कहा कि कृषि और जल संरक्षण की यह बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक है। उन्होंने भारत सरकार द्वारा संस्कृति से जुड़े संस्कृत और दूसरी भाषाओं के ग्रंथों के डिजिटलाइजेशन की पहल को महत्वपूर्ण बताया।

राज्यपाल ने कहा कि प्राचीन काल में भारत का भूभाग बहुत बड़ा था। म्यांमार, अफगानिस्तान, नेपाल आदि सब भारत के ही भाग थे। उन्होंने कहा कि "संस्कृति युवा संस्था" का नाम बहुत अच्छा है। भारतीय संस्कृति तो वास्तव में सदा सदा के लिए युवा ही है। उन्होंने कहा कि पश्चिम के देशों में आज भी भारत के दो महान ग्रंथों रामायण और महाभारत के प्रति सर्वाधिक आकर्षण है। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य है कि हमारी संस्कृति का बाहरी देश तो सम्मान करते हैं परंतु हमारे यहां बहुत से ऐसे हैं, जो इस संस्कृति का मजाक उड़ाते हैं।

राज्यपाल ने इससे पहले विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट विभूतियों को "राजस्थान गौरव" सम्मान से सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्कृति युवा संस्था के संस्थापक अध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा, प्रख्यात विधिवेता श्री एच.सी. गणेशिया, मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी श्री गोविंद पारीक ने भी संबोधित किया।

युवा संस्था
(Sanskriti Yuva Sanstha)
राजस्थान गौरव
सम्मान समारोह
गुरुवार, 30 जुलाई 2026
SINCE 1995

राजस्थान गौरव
सम्मान समारोह

संस्कृति
युवा संस्था
(Sanskriti Yuva Sanstha)
RAJASTHAN GAURAV
2026

संस्कृति

संस्कृति
राजस्थान गौरव
सम्मान समारोह

संस्कृति
युवा संस्था
(Sanskriti Yuva Sanstha)
राजस्थान गौरव
सम्मान समारोह
18th EDITION
14 FEBRUARY 2027
Largest Running Festival Of India!